# आचार्य महाप्रज्ञ के मंगलपाठ के साथ शुरू हुआ अन्तर्राष्ट्रीय शिविर
# विदेशी साधकों ने ली प्रेक्षाध्यान की दीक्षा

**लाडनूं ५ नव बर।**

प्रेक्षा इंटरनेशनल द्वारा जैन विश्व भारती परिसर में आयोजित त्वें अन्तर्राष्ट्रीय प्रेक्षाध्यान शिविर का शुभारंभ आचार्य महाप्रज्ञ के मंगल पाठ के साथ हुआ। इस शिविर में रूस, जापान, कजाकिस्तान, यूक्रेन, कुर्गन, इंग्लैण्ड, नेपाल, भारत आदि देशों के स्त्रक शिविरार्थियों को सुधर्मा सभा में युवाचार्य महाश्रमण ने प्रेक्षाध्यान की उपसंपदा दीक्षा प्राकृत भाषा के सूत्रों का उच्चारण करवाकर दी। उद्घाटन सत्र में प्रेक्षाध्यान के प्रतिक चिन्ह से युक्त पीले रंग के कवच धारण करने वाले देश-विदेश के प्रशिक्षुओं का जमावड़ा देखते ही बन रहा था। रूस से आये शिविरार्थियों को देखकर ऐसा लग रहा था मानो उन्होंने प्रेक्षाध्यान को जीवन का अंग ही बना लिया हो। कुछ प्रशिक्षुओं ने पीछले सातों शिविरों में भाग लिया है। जिनका मानना है कि आचार्य मह्मपज्ञ के व्यक्तित्व ने सबसे ज्यादा प्रभावित किया है। उन्होंने आचार्य महाप्रज्ञ के ज्ञानरूपी अखूट खजाने की चर्चा करते हुए बताया कि भौतिकतावादी युग में आचार्य महाप्रज्ञ जैसा त्यागी, तपस्वी और क्रांतिकारी महापुरुष मिलना दुर्लभ है।

उद्घाटन सत्र को संबोधित करते हुए युवाचार्य महाश्रमण ने कहा कि साधना के लिए संकल्प दीक्षा अथवा उपसंपदा की अपेक्षा होती है। प्रेक्षाध्यान की दीक्षा इसलिए दी जाती है कि साधक ध्यान के विकास पथ पर विधिवत बढता जाए उन्होंने शिविर के साधकों के लिए भाव क्रिया, प्रतिक्रिया विरति, सबके साथ मैत्री का व्यवहार, मिताहार और मितभाषण को जरूरी बताते हुए कहा कि यह सूत्र शिविर काल तक ही जरूरी नहीं है बल्कि पूरी जिंदगी इसकी परिपालना करना आवश्यक है। कार्यक्रम में प्रेक्षा इंटरनेशनल के रणजीत दूगड़ ने स्वागत भाषण प्रस्तुत किया एवं मैनेजिंग ट्रस्टी रमेश कोठारी ने शिविर का किट युवाचार्य महाश्रमण को भेंट किया।

कूरगन से शिविर में ाग लेने पहुंची शिविरार्थी ने वहां पर संचालित चालीस प्रेक्षा सेंटरों के आठ सौ संभागियों द्वारा किये जाने वाले कार्यक्रमों की रिपोर्ट प्रस्तुत की। संचालन मुनि मोहजीतकुमार ने किया। इससे पूर्व प्रेक्षा इंटरनेशनल के तत्वावधान में बालिकाओं के द्वारा सभी देशों से समागत शिविरार्थियों का भारतीय परंपरा के अनुसार तिलक लगाकर स्वागत किया गया।